निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष 1 अंक 5 | जनवरी-फरवरी-1983

ॐ त्वमेव साक्षात, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

धरती माता से क्षमा याचना

हे धरा ! वसुन्धरा माँ ।
क्षमा करो हे, क्षमा ॥

हे भूदेवी ! हे जननी ।
क्षमा करो, हे माँ ॥

हे जन्मदात्री ! पालनकर्त्री माँ।
क्षमा करो, हे माँ ॥

हे जीवनधारिणी ! आश्रयदायिनी माँ ।
क्षमा करो, हे माँ ॥

मिलता गगन क्षितिज पर ।
तू गगनांगन है, तू जीवन का प्राङ्गण है ॥

उगता है सूरज, बहता है समीर ।
तुझे सजाने, तुझे संवारने के लिये ॥

निशि में नभमण्डल पर चमकते ।
नक्षत्र तारे, तुझे बहलाने के लिये ॥

वन, उपवन, वाटिका, तेरे ही हैं गहने ।
कलकल करती नदियाँ, करतीं तेरा ही गुणगान हैं ॥

पक्षियों का कलरव, जीवन की ध्वनि ।
तेरी ही तान हैं ॥

हे पवित्रता की मूर्ति ! सहजता की जननी ।
तुझे मेरा शत्-शत् प्रणाम है ॥

हे पृथ्वी माँ ! क्षमा करो, क्षमा करो ।
क्षमा करो, हे माँ ॥

—एक बालक धरती माँ का

सम्पादकीय

सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि ।
गुणाश्रेय गुणमेय नारायणि नमोऽस्तुते ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

—श्रीदुर्गासप्तशती

माँ, तुम सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करने वाली, मङ्गलमयी हो, कल्याणदायिनी शिवा हो, सभी पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली शरणागत वत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो, तुम्हें नमस्कार है।

तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्व-गुणमयी हो। नारायणि, तुम्हें नमस्कार है।

शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणि देवि तुम्हें नमस्कार है॥

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री नारायणि साक्षात् सर्वस्वरूपिणि साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी नमो नमः।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर०डी०कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : श्री मार्क टेलर
१६५० ईस्ट फिफ्थ एवेन्यू
वैन्कूवर, बी.सी. कनाडा-
वी ५ एन. १ एम २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२२५, अदम्स स्ट्रीट, १/ई
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मेन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००६२
श्री राजाराम शंकर रजवाड़े
८४०, सदाशिव पेठ, पुणे-४११०३०

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विसेज लि.,
१६० नार्थ गावर स्ट्रीट
लन्दन एन.डब्लू. १ २ एन.डी.

इस अंक में . . . .

		पृष्ठ
१. सम्पादकीय	...	१
२. प्रतिनिधि	...	२
३. माताजी द्वारा फान्स में दिये गये वक्तव्य का हिन्दी रूपान्तर		३
४. प. पू. माताजी का पत्र	...	१०
५. बिकमिंग	...	११
६. प. पू. माताजी का पत्र	...	१६
७. श्री शिव के १०८ नाम	...	२१
८. एक सहजयोगी का पत्र	...	२४
९. त्यौहार	...	२४

ले रेन्स, फ्रान्स में ५ मई १९८२ को सहस्रार पूजा दिवस के शुभावसर पर माताजी श्री श्री श्री निर्मला देवी जी द्वारा दिये गये वक्तव्य का हिन्दी रूपान्तर

आज का शुभ दिन हम सब जिज्ञासुवृत्ति वाले भक्तों के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि 5 मई 1970 के दिन ही उस महान शाश्वत एवं सनातन जीवात्मा के अन्तिम चक्र को खोलने का प्रभूत कार्य उस दिव्यात्मा द्वारा सम्पन्न किया गया था। यह विश्व भर की समस्त आध्यात्मिक घटनाओं से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसको अत्यन्त सतर्कता से सावधानी पूर्वक सामन्जस्य एवं तारतम्य के साथ सम्पन्न किया गया है। यह तथ्य मानव प्राणी की बुद्धि और समझ के बाहर है अर्थात् मानवीय सूझ-बूझ की मर्यादा (सीमा) के बन्धन में नहीं है कि स्वर्ग में कामकाज किस प्रकार से होता है। यह आप लोगों का सौभाग्य और ईश्वर का अतुल प्रेम है कि जिसके द्वारा ये आश्चर्य चकित चमत्कार घटित होते हैं। इस घटना के घटित हुये बिना लोगों को सामूहिक रूप से साक्षात्कार प्रदान किया जाना सम्भव नहीं था। यहाँ या वहाँ केवल एक या दो व्यक्तियों को ही जागृति प्रदान की जा सकती थी परन्तु उस दशा में सामूहिक रूप से जागृति दिये जाने का कार्य सम्भव नहीं हो सकता था। जैसा कि आप जानते हैं सहस्रार में सात प्रधान चक्रों की सीटें (आसन) वर्तमान हैं। मानव शरीर के अन्दर एक सहस्र नाड़ियाँ हैं जिनको फ्लेम्स के नाम से पुकारा जाता है और वे सब की सब प्रत्येक सोलह हजार शक्तियाँ धारण करती हैं। प्रत्येक नाड़ी विशिष्ट प्रकृति के मनुष्य के साथ व्यवहार करती है। इन सब नाड़ियों के परिवर्तन से, और संयुक्तता से ही मानव जीव की देखभाल की जाती है। जैसे ही सहस्रार खुलता है अथवा खोला जाता है, उस समय समस्त वातावरण अत्यधिक चैतन्यता से भरपूर हो जाता है। और समस्त आकाश में अत्यन्त ज्योतिर्मय उजाला फैल जाता है और फिर सम्पूर्ण वस्तु धरती पर आ जाती है। यह इस तीव्रता से आती है जैसे मूसलाधार वर्षा पड़ रही हो अथवा एक जलप्रपात पूर्ण वेग से चल रहा हो। हम अनजाने में ही हतबुद्धि हो स्तब्ध रह जाते हैं। इस घटना की तीव्रता इतनी अधिक मात्रा में तथा इतनी आकस्मिक थी कि मैं उसकी श्रेष्टता एवं महत्वपूर्ण ऐश्वर्य से चकित होकर स्तब्ध, निश्चेष्ट एवं शान्त रह गई। मैंने सनातन कुण्डलिनी को ज्वलन्त विशाल अग्निकुण्ड की तरह उत्थान करते हुये देखा था और वह भट्टी अत्यन्त शान्तावस्था में थी, परन्तु जाजल्यमान एवं प्रज्वलित आकार धारण किये हुये थी, जैसे किसी धातु को अत्यन्त गर्म करने से वह बहुरंगी बन जाती है। इसी प्रकार कुण्डलिनी भी एक सुरंग जैसी भट्टी या अग्निकुंड के सदृश दिखाई पड़ती है। जैसे आप इन पौधों को देखते हैं जो कोयले को जलाने के लिये रखते हैं। ये विद्युत उत्पादन करते हैं और यह एक टेलिस्कोप की तरह से फैलाव में हैं और एक के पश्चात एक आयी-शूट, शूट, शूट कुछ इसी तरह से और देवतागण पधारे और उन्होंने अपने २ स्थान पर आसन जमाये, ये सुनहरी आसन और उन्होंने समस्त शिरभाग को गुम्बद की भांति ऊपर उठा लिया और इसको खोल डाला और फिर इस मूसलाधार वर्षा ने मुझे पूर्णतया भिगो कर तर-बतर कर दिया। मैं यह सब देखती की देखती

रह गई और आनन्दोल्लास में खो गई। यह दृश्य बिल्कुल वैसा ही था जैसे कोई कलाकार अपनी रचना को देख रहा हो। मैंने महान सिद्धि की उपलब्धि का आनन्द लिया। इस हर्षोल्लास के सुन्दरतम अनुभव के पश्चात बाह्य अवस्था में आकर मैंने चारों ओर अवलोकन किया और पाया कि जीवधारी मानव कितने अन्धे हैं अर्थात् अन्धकार में डूबे पड़े हैं और मैं अत्यन्त शांतावस्था में आ गई और तुरन्त इच्छा व्यक्त की कि मुझे अपने प्याले अमृत से परिपूरित करने चाहिये, सारे रोड़े पत्थर ही नहीं।

आपकी जीवात्मा का सुन्दरतम भाग सहस्रार है। यह बृहत सहस्रदल कमल विविध रंगों से विभूषित और फूले हुये अंगारों के सदृश दिखाई देते हैं। यह एक ऐसी वस्तु है जिसका अवलोकन बहुत से लोगों ने किया है, परन्तु इस मूसलाधार वर्षा को गिरता हुआ देखने का दृश्य बिल्कुल वैसा ही है जैसा ये अंगारे फव्वारा बनाते हैं और बहुरंगा रंगीन फव्वारा। एक सुगन्धि का फव्वारा; जब आप एक फूल को रंग प्रदर्शन और सुगन्ध फैलाते अपने विचार में लाते हैं। लोगों ने सहस्रार के सम्बन्ध में बहुत ही कम लिखा है क्योंकि उन्होंने जो भी कुछ देखा है वह बाह्य रूप से देखा है और उनके लिये यह सम्भव भी नहीं है कि वे इसे आन्तरिक रूप से देख पा सकें। यदि आप अन्दर से पहुँच पा भी जायें और समस्त सहस्रार खुला हुआ नहीं है, तब उस स्थिति में आप उसकी सुन्दरता को नहीं देख सकते; क्योंकि जबकि यह सारा का सारा बन्द कर दिया जाता है तब आप इसकी झिरीं में से गुजर कर बाहर निकल जाते हैं। परन्तु आप एक विशालाकार सहस्रदल कमल को अपनी कल्पना में लाइये और आप आन्तरिकता में प्रभा मंडल पर विराजते हैं और बैठे हुये उन पंखुड़ियों के दल का अवलोकन करते हैं और वे समस्त सुन्दर विचित्र रंगो में रंगे और सुगन्धित होते हुये और आनन्दोल्लास की धन्यता से स्पन्दन करता रहता है। उस स्थिति में स्थित रहना ही (यह स्थायित्व) एक आदर्शमय स्थिति है परन्तु उस शान्त चुप्पी के पश्चात् आप करुणा और प्रेम बाहुल्य से ओत-प्रोत हो जाते हैं और आप उन लोगों की ओर आकर्षित किये जाते हैं जिन्हें अभी तक यह ज्ञात नहीं हुआ है कि आँखें क्या हैं? (इस तथ्य का बोध कराने के लिये ही उन्हें इन अनजान लोगों की ओर खींच लाया जाता है।) तत्पश्चात आप अपना ध्यान लाखों लोगों के सहस्रार पर लगाने के प्रयास में जुट जाते हैं, फिर आप उन समस्याओं को जो सहस्रार में वर्तमान होती हैं, देखना आरम्भ कर देते हैं। यदि आप सहस्रार को खोलने की इच्छा करते हैं जो एक अत्यन्त कठिन कार्य है, क्योंकि दिव्यता की धारा को मानव जीवधारियों में प्रवाहित किया जाना मानव जीवधारियों के ही माध्यम से सम्भव होता है। वह शक्ति आपके अन्दर विद्यमान हो सकती है परन्तु इस धारा का प्रवाह मानव जीवधारी के माध्यम से ही किया जाता है। अपने समस्त जीवनकाल की अवधि में, मैं बहुत सी उद्बुद्ध आत्माओं (realised souls) को नहीं जान पाई हूँ। उनको कैसे पाया जाये? उनका पार कैसे पाया जाये? इसको किस प्रकार से सम्पन्न किया जाये? अतः मैंने लोगों की तलाश शुरू की और मुझे एक सत्तर वर्षीया बृद्धा मिली जो किसी के लिये अत्यन्त आकुल-व्याकुल थी। जब वह मेरे सान्निध्य में आई तो उसे पूर्ण शान्ति का अनुभव हुआ। उसका सहस्रार बहुत थका मान्दा, घिसा पिटा सा था और मेरे सहचर्य में, वह किसी अन्य कुछ के बारे में विचार कर रही थी परन्तु आत्मा के सम्बन्ध में नहीं, और उसका मस्तिष्क अन्धकार और बादलों से ढका हुआ था। बारम्बार, पुनः २ मुझे उसको बोध प्रकाश से प्रकाशमय बनाना पड़ता था। परन्तु फिर भी उसे जागृति प्राप्त नहीं हो पा रही थी। बहुत सारे लोग, जो शुरू-शुरू में मेरे पास आते हैं, केवल अपने रोग निवारण कराने के उद्देश्य से ही आते हैं (मेरे पास)। यह शक्ति युक्त सामर्थ्य की योग्यता मेरे अन्दर बाल्यावस्था से ही विद्यमान थी। पहिले भी मैं साक्षात्कार प्रदान कर

सकती थी, परन्तु जिज्ञासु को अत्यन्त सावधान एवं सहज होना पड़ता था तदर्थ। ऐसे गुण प्रधान पुरुषों में से मैं किसी को भी मुलाकात का समय नहीं देती थी क्योंकि मैं बनवास में तो रहती नहीं, मैं तो एक सामान्यजन की तरह से रहती थी और आस पास, पड़ौस में सामान्यजनों के बीच ही रहती थी। उस अर्थ में वे सब सजगता से सावधान नहीं रहते थे और मुझे उन के बीच में रहकर यह कार्य सम्पन्न करना पड़ता था। उनसे कैसे वार्तालाप किया जाये कि वास्तविक संसार की क्या सत्ता है और मिथ्या क्या है जिसमें वे रहते हैं? एक भद्र महिला जो सर्वप्रथम मेरे पास आई और साक्षात्कार पा गई, वह मेरे पास केवल इस हेतु आई थी कि वह खोजने के विचार की पकड़ में थी। उसने खोजा और पाया। यह एक अत्यन्त हर्षोल्लास का दिन नहीं था क्योंकि वह उन व्यक्तियों में से एक नहीं थी जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कार प्राप्त किया था। इस महत्वपूर्ण घटना के पश्चात बहुत एक ही समय में एक साथ पाने लगे। १९७० में बोर्डी (महाराष्ट्र प्रदेशान्तर्गत) के स्थान पर हम प्रोग्राम कर रहे थे। वहाँ एक भद्र पुरुष ने सांध्य काल में साक्षात्कार पा लिया। दूसरे दिन प्रातः कालीन प्रोग्राम में बाधाओं ने विघ्न डालना आरम्भ कर दिया, वे सब पक्षपात किये जाने के उपालम्भ देने लगे। मैंने वातावरण में झांककर देखा तो मुझे उल्टे किस्म की चैतन्य लहरियां प्राप्त होती प्रतीत हुईं। क्योंकि वे गलत दिशा में प्रवाह कर रही थीं। सायंकाल की सभा में मैंने दृढ़ता से सख्त रुख अपनाया, मुझे तीव्र आक्रोश था, मैं पहिले कभी भी इतनी क्रोधित नहीं हुई थी और मैंने उन सबको बुरी तरह से डांट डपट दिया। महान आश्चर्य का विषय था कि उनमें से बारह पुरुषों ने आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लिया। यह एक महान महत्व-पूर्ण उपलब्धि थी। तत्पश्चात बहुत सों ने एक २ करके साक्षात्कार प्राप्त किया। उनमें से वापस जाते समय ट्रेन में साक्षात्कार पाया था। अक्समात ही उन्होंने चैतन्य लहरियों का अनुभव करना आरम्भ कर दिया। इस भाँति से सामूहिक उत्क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

सहस्रार आपकी जागृति है—चेतना है। जब यह प्रकाशमय बन जाती है तो आप उस दिव्य की तकनीक में प्रवेश कर जाते हैं। अब ये तकनीक दो प्रकार की हैं, एक उस दिव्य की तकनीक दूसरी वह तकनीक जिसका अनुसरण आप कर रहे हैं। आप दिव्य की भांति कार्य नहीं कर सकते परन्तु आप दिव्यशक्ति का प्रयोग कर सकते हैं और उसको चतुराई पूर्वक व्यवहार में ला सकते हैं। उदाहरणार्थ, दिव्य समस्त जगत की घटनाओं की देखभाल करता है। प्रत्येक क्षुद्रातिक्षुद्र कण भी दिव्य के अधिकार में है। जब आपका सहस्रार खुल जाता है और आपकी कुण्डलिनी खोपड़ी की अस्थि का स्पर्श करती है तब आपके सहस्रार में एक ज्वलनशील सामर्थ्य जैसी कोई वस्तु तैयार रहती है और जैसे ही ब्रह्मरंध्र में शिरग्रभाग की अस्थि का क्षेत्र खुलता है तब आत्मा की करुणा, दया उस ज्वलनशील पदार्थ को सुलगाती है और आपका नाड़ी तन्तुजाल प्रकाशमय हो जाता है। वे सबके सब ही नहीं होते परन्तु उनमें से काफी अधिक संख्या में, सारी लम्बाई में ही नहीं वरन् बिल्कुल घेरे में परिधि में—यह वही प्रकार है, ढंग है, पद्धति है जिससे आप उद्बोधन, बोध ज्ञान, प्रकाश-मय, इनलाइटनमेन्ट प्राप्त करते हैं। अतः (आप के अन्दर) बहुत सी ऐसी वस्तुयें होती है क्योंकि आपके सहस्रार में सात केन्द्र विद्यमान है। इस प्रकाश से ही आप उनकी सम्बन्धित स्थितियों को देख सकते हैं। मेरा मन्तव्य है आप नहीं देखते हैं। परन्तु यह आपके चेतन मस्तिष्क कार्य करती है। आपका चेतन मस्तिष्क आपके साथ समन्वय का अनुभव करता है अर्थात तादात्मय कर लेता है। विचार शक्ति जो हृदय से अलग की गई है, हृदय के साथ एकाकार हो जाती है। यह ध्यान के साथ भी तादात्मय स्थापित कर एकाकार हो जाती है। जहाँ जहां भी आपका ध्यान जाता है आप सामूहिक रूप

से कार्य करते हैं। आपके ध्यान की समस्त क्रियायें आशीषयुक्त होती हैं। आपका ध्यान स्वयं प्रभावशाली है। आपका ध्यान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आपकी इच्छायें और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह एक ऐसी वस्तु है जो एकयता के सूत्र में बँधी है। आपकी इच्छायें और ध्यान एकरूप हो जाते हैं। आत्मा के लिये जो अच्छा कल्याणकारी है उसी की आप आकांक्षा करते हैं और आपका ध्यान वहीं जाता है जहाँ कहीं भी आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह (उद्गार) होगा। प्राथमिकतायें बड़ी शीघ्रता से बदलती हैं। वे लोग जो प्राचीन एवं मौलिक है और उत्क्रान्त नहीं हैं, इस घटना को नहीं खोज पा सकते हैं परन्तु वे जीवधारी जिनका मानसिक विकास हो चुका है उनके पास ध्यान है जिसके द्वारा वे जांच पड़ताल की कोशिश कर सकते हैं। वे सर्वप्रथम तो यही देखना चाहेंगे कि कुण्डलिनी किस प्रकार से उठाई जाती है।

वे देखना चाहते हैं यह एक तर्क संगत है। एक सन्तुलित व्यक्ति के लिये प्रश्नसूचक कुछ भी नहीं है। इस प्रकार के व्यक्तियों की कुछ संख्या हमारे में ही विद्यमान है। वे बस हो गये हैं और उनपर उंगली उठ नहीं सकती अर्थात सन्देहरहित हैं। वे ठीक से स्थायित्व प्राप्त कर लेते हैं। वे मासूम (सरल) हैं, वे विवेकशील हैं, सर्वोपरि वे आध्यात्मिक हैं। उनके गुणों में भी कुछ दोष हो सकते हैं जो आपके सहस्रार के माध्यम से ठीक किये जा सकते हैं। सर्वप्रथम आपको अपने अहं को दबाना है; क्योंकि यदि ईगो वहां है तो वह सहस्रार पर दबाव डालेगी। सर्वोच्च अहं की मात्रा भी कम करनी चाहिये क्योंकि यह भी सहस्रार पर अपना दबाव डालेगी और पीड़ित करेगी। अतः सहस्रार को पूर्ण स्वस्थ अस्वथा में रखना आवश्यकीय है। प्रत्येक को यह सोच-विचार करना चाहिये कि प्रत्येक की प्राथमिकताओं में परिवर्तन अवश्य आना है। कुछ लोग अधिक समय ले लेते हैं क्योंकि वे विचार पूर्वक सावधानी से प्रयास करते हैं। ऐसी बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिन्हें यदि आप पढ़ना चाहें तो वे ईश्वर विरोधी अर्थात् नास्तिकता के कार्यों को सुझाती हैं। एक उद्बुद्ध प्रकाशमय सहस्रार उनमें रुचि नहीं लेता है। वह इनको वापस बन्द कर देता है। यह विषतुल्य है। वह कभी भी नहीं चाहेगा कि विषाक्त विचार उसके मन में आयें। आप यदि विष का पान आरम्भ करें तो भी यह बन्द हो जाता है। इसी प्रकार वे लोग जो क्रोधी स्वभाव के हैं, अत्यधिक क्रुद्ध प्रकृति के हैं और समस्त अन्य समस्यायें जो ईगो से सम्बन्धित हैं। यदि वे सहस्रार को बलात दबाना चाहते हैं या उसको दबाने का प्रयास भी करते हैं तो यह सहस्रार बन्द होना आरम्भ हो जाता है। वे लोग जो मिथ्याचारी गुरुजनों द्वारा दुराग्रही बनाये जा चुके हैं, तथा जो गलत किस्म की पुस्तकें पढ़ते हैं या ग़लत किस्म के माँ-बाप से हैं अथवा जो भ्रष्ट देशवासी हैं अथवा भ्रष्टाचारी आजीविका कमाते हैं, ये सब सहस्रार को, स्वस्थ ढंग से, बढ़ोतरी करने में सहायता नहीं करते वरन सहस्रार को बढ़ने देना ही नहीं चाहते हैं।

यह केवल मात्र सहस्रार ही है जो बढ़ना चाहता है आत्मा नहीं। जितना भी कोमल एवं सूक्ष्मग्राही सहस्रार होगा उतना ही अधिक आत्मा में यह आध्यात्मिक गुणों को ग्रहण करता है। सहस्रार में परमानन्द की प्राप्ति का अनुभव होता है। वास्तव में शान्ति का अनुभव सहस्रार में ही होता है। क्योंकि वह मस्तिष्क है और मस्तिष्क नर्वस सिस्टम का संग्रह है। सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम (केन्द्रीय नाड़ी संस्थान) अथवा चेतना स्वयं का संक्षेप संग्रह भी वहीं पर है। अतः सहस्रार के केवल खोलने मात्र से कार्य सम्पूर्ण नहीं हो जाता है। हमें अधिक से अधिक चैनल्स रखनी पड़ती हैं जो नाड़ियों की अपनी विविध शक्तियों के साथ और जो उचित् एवं यथार्थ ढंग से (सुचारू रूप से) कार्य कर सकें। परन्तु वे लोग जो साक्षात्कार के पश्चात् भी अपनी अपव्ययी (उड़ाऊपन) की आदतों में आसक्त

हो उनके वशीभूत रहते हैं वे नाड़ियों में गतिरोध उत्पन्न कर देते हैं और विराट के लिये हानिकारक वास्तव में सिद्ध होते हैं। ऐसे लोगों को वास्तव में सहजयोग छोड़ देना चाहिये, जिससे औरों का बचाव हो सके अथवा ऐसे लोगों को निकाल बाहर किया जाना चाहिये और हम सब को ऐसे लोगों से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिये क्योंकि ऐसे ही लोग उस दिव्य के महान् कार्य को सम्पन्न किये जाने का विरोध करते हैं।

प्रत्येक वह मानव जीवधारी जो सहस्रार का विकास करना चाहता है उसे जानना चाहिये कि इसका विकास बुरी संगति से नहीं करना चाहिये वरन् उसे अन्य सहजयोगियों की सुसंगति करनी चाहिय। उसे अपने अवकाश स्वयं नहीं बिताना है और न ही अपना समय व्यर्थ खोना है। परन्तु अवकाश के समय का अधिकांश भाग अन्य सहज योगीजनों की संगत के साथ बिताना चाहिये।

सहस्रार के पश्चात जब आप सहस्रार के ऊपर हो जाते हैं, उस समय आप देख सकते हैं कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह कि ये सब नाड़ी पुंज इकट्ठी की जा कर रखी जानी चाहिये। और समस्त केन्द्र (चक्र) और उनके देवगणों की अखण्डता और समन्वयता को अक्षुण्य बनाये रक्खें। यह कार्य चेतना के प्रयास के साथ भी किया जा सकता है, अपने आपकी चौकसी करते हुये। अपने विचारों की चौकसी करते हुये आप अपने अहं का तथा सर्वोच्च अहं का अवलोकन करना आरम्भ कर दें। आप यह देखने के योग्य हो जायेंगे कि आप अपने आपको कैसे धोखा दे रहे हैं और अपने आप से कितनी बेईमानी करते हैं और किस भाँति अपने आपको आश्वस्त करते हैं। आप अपनी अहं यात्रा को किस प्रकार की मौज-मस्ती से मना रहे हैं।

सहज योग भाव (spirit) सदृश्य लोगों के लिये है। अतः अन्य सब वस्तुओं को छोड़ देना चाहिये। वह अपने चेतन चित्त के माध्यम से कर सकता है, जैसा मैंने कहा कि प्रत्येक साधक को आपको ठीक करना चाहिये क्योंकि साक्षात्कार के पश्चात जो कुछ भी आप चाहते हैं, जो भी आपकी इच्छा होती है वह दिव्य इच्छा मनोरथ का एक भाग हो जाता है और आप जो भी कार्य सम्पादन करते हैं वह दिव्य कार्य का एक अंग हो जाता है। अतः हम सबको अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये कि सजग प्रयास द्वारा अर्थात् चेतन प्रयत्नों के माध्यम से हम वास्तव में अपने आपको खोज पा सकते हैं और देखें यदि हम तदर्थ वास्तव में ईमादार भी हैं।

यदि हम ईमानदार व्यक्ति हैं तो हम देख सकते हैं कि सहस्रार के फैलाव प्रसार का केवल मात्र मार्ग सामूहिकता ही है। इसके लिये सहन-शीलता की आवश्यकता होती है, बुद्धि विवेक की जरूरत पड़ती है और एक पैगम्बर का डील डौल चाहिये जो आप हैं और आपको प्रोफेटों जैसी बातें करनी चाहिये। वास्तव में, आपको अपने आपको शिक्षित बनाना है कि एक पैगम्बर किस भाँति से वार्तालाप करता है। यह कपट, छल या अभिनय नहीं है क्योंकि अब आप जागृति पा गये हैं। जब तक कि आप जागृत नहीं किये गये थे, तब तक जो कुछ भी आप ऐसा कार्य करते थे सब बनावटी था। सहस्रार, एक नियंत्रणकर्ता मार्गदर्शक, विस्तृत उत्क्रान्त सामर्थ्य और बढ़ोतरी के लिये तथा फैलाव के लिये सदैव सन्नध-तैयार रखने हैं। प्रत्येक को अपनी बढ़ोतरी की स्वतः चौकसी करनी पड़ती है। आप अपनी त्रुटियों के लिये, ग़लत कार्य कलापों को तर्क से खरा सच्चा सिद्ध करने का प्रयास कभी न करें। यदि आप इसे सत्य सिद्ध करना चाहेंगे तब आप इस पर मनन एवं विचार भी करेंगे। हमारे पास इस पर मनन एवं विचार करने के लिए समय नहीं है। हमें किसी और के लिये सोच विचार एवं मनन करना है। क्योंकि ये अन्य भी आपके मस्तिष्क में भरे पड़े हैं।

और जब इन अन्यों के विषय में सोच विचार आरम्भ कर देंगे और उनके पुनर्जीवन के सम्बन्ध में बातचीत करेंगे तो आपका सहस्रार, निश्चय से, अपने साइज में उन्नति करेगा और फैलकर अति विलक्षण एवं मर्मज्ञ हो जायेगा। सूक्ष्मग्राही संवेदन शीलता की वृद्धि होगी। गहनता भी आयेगी। यह एक पेड़ के सदृश है, जब यह उगता है, बढ़ता है इसकी जड़ें फैल जाती हैं। अतः आपको अपने खोलों से बाहर निकलना है और अपने पंख फैलाने हैं। आप अपने चित्त की छोटी २ वस्तुओं को निकाल बाहर करें अथवा उनका परित्याग करदें आपको एक महान् सम्पन्न व्यक्तित्व की तरह से रहना है जिसको अन्यों की सहायता, मार्गदर्शन, सहारा और जागृति हजारों की संख्या में देनी है।

यदि फ्रांस में सहस्रार दिवस एक नया शक्ति सञ्चालन (dynamism) इस देश में स्थापित करता है तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह लोगों के विचारों को ऊपर से ऊपर ही पकड़ लेगा और इसकी प्रतिध्वनि चित्त में गूंजती रहेगी। उनकी अचेतना उनकी जीवात्मा में इसको संचारित कर देगी और वे एक नये सिरे से सोच विचार आरम्भ कर देंगे। अब नये नये बड़ी सफलताओं के प्रवेश द्वार खुलेंगे अर्थात् अब नई नई घटनायें घटित होंगी और लोग सत्य की ओर तर्क से (logically) जाना आरम्भ कर देंगे। वे सही निर्णयों पर पहुँचने लगेंगे और जो कुछ भी निरर्थक, अपव्ययी और वृथा होगा उसका परित्याग कर देंगे।

सहस्रार आत्मा के लिये राजसिंहासन है और राजा उससे भी बड़ा है। राजसिंहासन विशाल है। जिस प्रकार अथवा रीति से आप आत्मा से व्यवहार करते हैं वही आपके सहस्रार में भी प्रकट होता है। और इसी प्रकारान्तर से आप साक्षात्कार दे सकते हैं। तब फिर आप विलक्षण रहस्यमय जीवात्मा बन जाते हैं। आप सजग प्रयास के माध्यम से अन्य (व्यक्तियों) की जीवात्मा (being) में प्रवेश कर सकते हैं और उनकी कुण्डलिनी उठाते हैं। सहस्रार को प्रकाशमय होते हुये भी आपको एक नया प्रकाश देता है जिससे आप समस्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म देखते हैं, समस्त विलक्षण एवं रहस्यमयता वातावरण में देख सकते हैं। जब आप उच्चतर से उच्चतम विकास करना आरम्भ कर देते हैं तब आप चैतन्य लहरियों को अपने चारों ओर प्रकाश के रूप में देख सकते हैं।

आप बहुत-सी चीजों में कोई भी (कुछ भी) रुचि नहीं लेते हैं परन्तु आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि आप प्रत्येक वस्तु के सिद्धहस्त कैसे हो गये—जैसे कि आपका मस्तिष्क वही प्रादुर्भाव कर रहा है जिसकी आपने इच्छा की थी। और यह वही है जिसका श्रीकृष्ण भगवान ने वचन दिया था जो स्वयं वास्तव में विराट् हैं। सो आप अपने मस्तिष्क के मास्टर हो गये हैं क्योंकि वास्तव में जीवात्मा मस्तिष्क की मास्टर है। जितनी अधिक आप अपनी जीवात्मा को अपने ध्यान में लायेंगे उतना ही अधिक सहस्रार साइज में बढ़ोत्तरी करेगा। उसका प्रकाश फैलेगा। और आप एक शक्ति सम्पन्न सहजयोगी हो जाते हैं। यह सर्व-शक्तिमान ईश्वर के लिये एक सर्वाधिक महान् वस्तु होगी यह कहने के लिये कि "देखिये! यह घटना घटित हो गई है"। अतः फ़िलहाल वह अपने आक्रोश को और क्रोध को स्थगित कर देगा, सो वह आपकी त्रुटियों के लिये आपको क्षमा प्रदान कर सकता है और हट को और विचकानी हरकतों को भी माफी दे सकता है। मानव को अपने परमपिता की श्रेष्ठता, महानता और कीर्ति यश प्रताप का दर्शन लाभ लेने हेतु उत्थान करने दीजिये। उसे ईश्वर की दयालुता एवं करुणा को सहन करने की शक्ति भी प्राप्त करने दीजिये। उसे सहस्रार को इतने परिमाण (आयाम) तक विकास करते देखने दीजिये कि वह अपने चेतन चित्त के द्वारा दिव्य के कार्य कलापों का सम्पादन कर सके।

सहस्रार का एक मन्त्र है। वह है "निर्मला",

निर्मला योग

जिसका अर्थ है कि प्रत्येक को स्वच्छ, सुथरा, पवित्र और निष्कलङ्क रहना चाहिये। यही आपकी सम्पत्ति है। आप इसको स्वच्छ और साफ़ सुथरा रखने का प्रयत्न कीजिये और निश्चयपूर्वक एक पग और अग्रसर हो जायेंगी। यह एक और बहुत अधिक संख्या में नूतन परिमाण में (नये आयाम में) वेग से कूदना होगा।

आज पैरिस में उपस्थित होना एक महान् प्रसन्नता का द्योतक है। फ्रांस के पेरिस नगर पर समस्त संसार का ध्यान आकर्षित होना आवश्यक है। यह देश जिसको शापित किया गया तथा समस्त देवगणों द्वारा बिसार दिया गया है क्योंकि मानव जीवात्माओं ने अत्यन्त त्रुटिपूर्ण, भ्रष्ट मार्ग अपनाया है। इस देश में सर्वत्र देवता लोगों को प्रतिष्ठित होने दीजिये। क्योंकि यह केवल मात्र ध्यान है और जो कुछ भी हम ध्यान धरते हैं अथवा जिस किसी पर भी हम अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, उसकी रिपोर्ट हमें सहस्रार के द्वारा प्राप्त हो जाया करती है। अतः हम मंगल कामना करते हैं कि फ्रान्स देश का सहस्रार खुल जाये और फ्रान्स का ध्यान आत्मा की ओर लगे, केन्द्रित हो और यहाँ के निवासी शाश्वत सनातन जीवन व्यतीत करें। यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देश है जिसमें सम्भ्रान्त, सभ्य विद्वान् लोगों का निवास है। यही कारण है कि मैंने सहस्रार दिवस यहाँ मनाने का निश्चय किया। फ्रान्सीसी सहजयोगियों का उत्तरदायित्व (जिम्मेदारी) अत्यधिक मात्रा में है। उन्हें अपने रहन-सहन, व्यवहार, आचार के ढंग, विधि, तरीकों को बदलना पड़ेगा अर्थात् अपनी आचार विचार संहिता में परिवर्तन लाना होगा। उन्हें कृपायुक्त, करुणामय, सुशील तथा स्वस्थ होना है—वास्तविक सच्चा खरा मानव बनना है। परन्तु उन्हें साथ ही साथ सुदृढ़ सहजयोगी भी बनना है जिससे जब अन्य लोग उन पर दृष्टिपात करें तो उन्हें उनमें (सहजयोगियों में) श्रेष्ठता का दर्शन दृष्टिगोचर हो। सहस्रार दिवस समारोह से पूर्व काल में भी हम सफलतापूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न कर चुके हैं। मुझे यह सब देखकर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अब मैं संसार के समस्त केन्द्रों को अपनी मंगल कामनायुक्त शुभाशीर्वाद देती हूँ। जिन्होंने सहस्रार की प्रगति एवं विकास के लिये एवं इसे प्रकाशमय बनाने के लिये स्तुति-प्रार्थना आदि कार्य किये हैं जिससे वे इतनी विशालता से फैलाव कर सकते हैं। अतः वे उस सम्पूर्ण के साथ एकता स्थापित कर एकाकार हो जायं।

भगवान आपका कल्याण करें।

अमृत-वाणी

(१)

क्या जीवन में यह विलक्षण घटना बहु-संख्यक जन समुदाय को उपलब्ध होना सम्भव है जिसके द्वारा वे अपने स्वयं के सृजनात्मक जगत को सर्वव्यापी शक्ति के महान् विश्व में घूर्णन करते (revoluing) देख सकें?

मेरा एक मात्र उत्तर है—हाँ। मेरा एक मात्र प्रश्न है—क्यों नहीं?

—परम पूज्य श्री माताजी

(२)

ध्यान निरन्तर चिर वात्सल्यमयी माँ भगवती के सान्निध्य स्थित रहने की अवस्था है। इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

—परम पूज्य श्रीमाताजी

मत्प्रिय सहजयोगी !

मानव चित्त में बहुत भ्रम भरे हुए हैं। भ्रम छूटने से ही मानव चित्त ज्ञानरूप और आनन्दमय होगा। कुण्डलिनी जागृति से आपके बहुत से भ्रम छूट गये हैं—

१. आपने यह जान लिया है कि मनुष्य में कुण्डलिनी एक जागृत शक्ति है, कल्पना नहीं।

२. यह शक्ति समस्त मानव जाति में है। उसका उद्दीपन स्वस्थ मनुष्य में सहज स्वाभाविक रूप से होता है।

३. यह उद्दीपन किसी कार्य से नहीं होता है। किन्तु साधक यदि दुष्कर्मी है तो यह उद्दीपन कार्य नहीं होता है कारण, कुण्डलिनी सुप्तावस्था में भी उसके कर्मों से अवगत होती है। उसे विवेक है। साधक की मां होने के नाते उसके भले बुरे का ज्ञान होता है। कुण्डलिनी की कृपा से साधक का रुग्ण मन व शरीर ठीक होता है।

४. कुण्डलिनी भगवती की इच्छाशक्ति है। वह भगवती के सङ्कल्प मात्र से जागृत होती है। उच्चकोटि के मनुष्य को इसके लिए काफ़ी प्रयास करना पड़ता है। किन्तु इसमें उसका कोई दोष नहीं।

५. ब्रह्मतत्व, जोकि चैतन्य लहरी के रूप में आप के शरीर से बहता है, आपके शरीर, मन एवं अहङ्कार को साफ़ करता रहता है। जब भी आपके चक्र धूमिल पड़ते हैं तब ये चैतन्य लहरियाँ आपको सूचित करती रहती हैं।

६. जब आप स्वस्थ शरीर, शुद्ध मन और अहङ्कार रहित होते हैं तब आत्मानन्द मिलने लगता है। आनन्द की लहरें आत्मा में बहने लगती हैं क्योंकि आत्मा का आनन्द निर्लेप होता है।

७. विश्व का निर्माण क्यों और कैसे हुआ ? क्या परमात्मा का अस्तित्व है ? ये प्रश्न मूलभूत हैं। देवगण भी इन्हें समझ नहीं सके। परन्तु मैंने जो कुछ भी कहा है इसकी सच्चाई चैतन्य लहरियों से जान सकते हैं। इसके लिए चैतन्य लहरियों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

जब आप अनुभव द्वारा सीखेंगे कि प्रेम और सत्य एक ही है और अनुभव द्वारा ही सूक्ष्म ब्रह्म-तत्त्व को पहचानेंगे कि ब्रह्म विकार रहित है तब आपका भ्रम छूटेगा। ब्रह्मतत्त्व आपके अन्दर कमल के समान खिलेगा और उसकी सुगन्ध चारों तरफ़ फैलेगी। जब आपका चित्त ब्रह्म के समान होगा तब आपका भ्रम, जो मिथ्या है, टूटेगा।

८. ब्रह्मतत्त्व सूर्य के समान है फिर भी उसकी किरणें जल (मिथ्या) पर प्रतिबिम्बित होकर मानव चित्त को विचलित करती हैं। किन्तु जब आपका चित्त स्वयं ब्रह्म हो जावेगा तब विचलित नहीं होगा जो ध्यान धारणा से संभव है। ध्यान का अर्थ है प्रेममयी भगवती का सान्निध्य।

९. अब आपके अन्दर सामूहिक चेतना जागृत हो गई है। यही सामूहिक चेतना ब्रह्मशक्ति है। यह सम्पूर्ण विश्व में है। कण-कण में फैली है। यह जड़ता में जड़, चेतना में सौन्दर्य, जाग्रत में आनन्द और सहजयोग में चिदानन्द, परमयोग में परमानन्द और भगवती में ब्रह्म भूत्व शक्ति है।

यह सब आपने समझ लिया, जान लिया अब इसका अनुभव कीजिए। मन को स्थिर बनाकर, हृदय समर्पित करके भ्रमरहित बनिए यही मेरा आशीर्वाद है।

सर्वदा आपकी ही माँ,

निर्मला

परम पूजनीय माताजी श्री निर्मला देवीजी

ओल्ड अलसंफ़ोर्ड
दिनाङ्क १८ मई १९८० ई०

बिकमिंग*

(उचित्, अनुरूप, युक्ति होना)

यहकेवल मात्र इस कारण से है किमैंने आपको जन्म दिया है। मैं आपको सूचित करना चाहतीहूँ कि पूर्वकाल में किसी ने भी यह नहीं किया था। आप दूसरों की चिकित्सा कर उन्हें भला चंगा बना देते हैं। सहज-योग में आप व्याख्यान दे सकते हैं, आप अपनी समस्याओं को जान सकते हैं, आप अपने आसपास के पड़ौस से भी अनभिज्ञ नहीं हैं। आप अपने आपको स्वच्छ-निर्मल रख सकते हैं तथा अन्य लोगों को भी साफ़-सुथरे बना सकते हैं। यह साक्षात्कार के साथ एक गठरी में बँधा है। कितनी सुन्दर उत्साही एवं साहसिक कुदान है जो केवल इच्छामात्र से प्रथम जागृति है। यहीं से आपने शुभारम्भ किया है। परन्तु वे ही समस्त वस्तुयें जो पहिले कौतुहलवर्द्धक दृष्टिगोचर हो रही थीं जब कि आपने इच्छा की थी, वे एक विलक्षण रहस्यमय सुन्दर आकार के रूप में आपके अन्दर आ विराजीं। उस समय में आप, आप निश्चय से अपने चक्रों को, उनकी समस्याओं को महसूस करते हैं और तत्काल ही उनका विश्लेषण करना आरम्भ कर देते हैं। सबसे विकट समस्या पश्चिम वालों के साथ यह है कि वे विश्लेषण आरम्भ कर देते हैं। आप उनको कोई भी मामला दें वे तत्काल ही उस का विश्लेषण आरम्भ कर देते हैं। उनको कोई भी वस्तु दीजिये वे विश्लेषण कर बैठेंगे। एनेलिसिस (विवेचनात्मक विश्लेषण) एक महान् वस्तु बन गई है और यही कारण है जिस प्रकार से यह विवेचन विश्लेषण क़ायम है। यह उन्हें पगला देने वाली प्रक्रिया है। यही बात है कि वे अपने साक्षात्कार के साथ चिपके हुये हैं, संलग्न हैं। प्रत्येक वस्तु पदार्थ के दूसरे आकार अथवा पक्ष का विवेचनात्मक विश्लेषण करना। आप देख रहे हैं पंजों का विश्लेषण, टाँगों का विश्लेषण, नाखूनों का विश्लेषण किया जाता है। और उनको दूरबीन पर चढ़ाया जाता है और उसका निरीक्षण परीक्षण भी किया जाता है। वहाँ पैरों से ऊपर चढ़ने का काम लिया जाता है और आप लगे हैं चरणों और पाँवों का विश्लेषण करने। देखिये सारा का सारा प्रयोजन ही निष्फल हो गया जब आपके हाथ जो भी कुछ लगा अथवा जो सिर पर आ पड़ा तभी आप उसका विवेचनात्मक अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं। अतः आपको कहना है और चाहिये भी "अब समाप्त हो गया है सम्पूर्ण हो गया है, अब मैं एक दूसरा ही व्यक्ति बन गया हूँ।"

जब आपको साक्षात्कार की उपलब्धि हो जाती है, तब आपकी इस जागृति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु हैं। आपको स्वीकार करना चाहिये कि जब एक पुरुष, मृत, समाप्त होकर चला गया है। "मैं एक भिन्न व्यक्ति हूँ, अलग थलग हूँ"। अब लोग इसकी स्वीकारोक्ति को कितना दुष्कर कार्य समझ रहे हैं क्योंकि वहाँ श्री अहं जी विराजते हैं।यह आप को आज्ञा नहीं देगी और कहेगी कि "हे भगवान् यह कैसे हो सकता है, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आपमें पूर्णतः परिवर्तन आ गया है, क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप लोग, लोगों को

*Becoming—परम पूजनीय माताजी के अंग्रेज़ी में दिये गये भाषण का हिन्दी अनुवाद।

साक्षात्कार करा सकते हैं। आप किसी को भी कह देखिये वे तत्काल कहेंगे कि "ओह मैं यह जानता हूँ।" वे सब के सब भाग खड़े होंगे, उनमें से कोई भी विश्वास नहीं लायेगा परन्तु आपको ज्ञान है कि आप साक्षात्कार दे सकते हैं। कोई भी विश्वास नहीं करेगा। एक बार एक योगी महाराज मेरे पास आये और कहने लगे कि माँ यह कैसे हो सकता है? वह विश्वास ही नहीं कर सके कि वे साक्षात्कार दे सकते हैं। वे दया के पात्र योगी बेचारे काफ़ी वर्षों से योगाभ्यास कर रहे थे। आरम्भ में वह विश्वास नहीं करता था—वही योगी अब फटाक-फटाक साक्षात्कार दे रहा है। यदि विश्वास भी करे तो भी आप साक्षात्कार दे सकते हैं परन्तु इसमें समय का अधिक लगना स्वाभाविक है—क्योंकि "विश्वासो फलदायक" की उक्ति चरितार्थ हुये बिना नहीं रहती। वे विश्वास ही नहीं कर सकते हैं अतः अनुरूपता (becoming) के लिये आपको विश्वास धारण करना ही पड़ेगा, हाँ आप साक्षात्कार प्रदान कर रहे हैं। निःसन्देह, आप इसको श्वेत वस्त्र के समान अपनी आँखों के सामने देख रहे हैं। फिर भी आप कह रहे हैं कि यह वस्त्र श्वेत नहीं काला है। शर्ट ब्ल्यू है। अतः यह काला नीला व्यवहार ही निकृष्ट है। आप साक्षात्कार प्रदान कर रहे हैं। आप कैसे कल्पना कर रहे हैं कि आप मनो-चिकित्सिक के पास जा रहे हैं। आप तो साइके-ट्रिस्ट को भी साक्षात्कार करा सकते हैं। वह डॉक्टर जो आपकी चिकित्सा करने जा रहा है, आप उसको साक्षात्कार दे सकते हैं। आप विश्वास करिये, आप दे सकते हैं। परन्तु जब आप उससे कहेंगे कि मैं आपको साक्षात्कार कराना चाहता हूँ तो वह भाग खड़ा होगा। परन्तु आप अपने में विश्वास धारण कीजिये। यह वह स्थान है जिस पर आपको श्रद्धा-निष्ठा लानी है। यह श्रद्धा भक्ति जो आपने साक्षात्कार के रूप में प्राप्त की है, सब सहजयोग द्वारा ही सुलभ हुई है। यह एक अतुलनीय शक्ति है। यह एक सर्वव्यापी शक्ति है जो अत्यन्त, अबाधित, अप्रतिबद्ध शक्तिशाली है और यही शक्ति है आपके माध्यम से प्रवाहित हो रही है और आप साक्षात्कार प्रदान कर रहे हैं। और यह भी है कि आपका भ्राता कुछ न कुछ विशिष्टता लिये भी हो सकता है। श्रद्धा केवल श्रद्धा ही नहीं है क्योंकि मैं कह रही हूँ, क्योंकि यह अन्धी है, चक्षुहीन है, परन्तु आप ने तो इसे देख पाया है कि यह वास्तव में है। क्या हुआ यदि आपने इसे देख भी लिया परन्तु आप इस में विश्वास तो नहीं ला पा रहे हैं। अब मुझे क्या कहना चाहिये? यदि आप विश्वास करते हैं कि यह ऐसा है—सत्य है, तो यह श्रद्धा हुई। कल्पना कीजिये श्रद्धा का अर्थ है—तात्पर्य है अन्धापन। यह आपकी आँखों को और खोल रहा है यह देखने के लिये कि यह क्या है और इसको स्वीकार करना कि यह यथावत है—ऐसा ही है। उस समय श्रद्धा उमड़ेगी, उभरेगी।

इस स्टेज पर, यह श्रद्धा की ही शक्ति है कि जो आपकी सहायता करती है। यह और कुछ नहीं है केवल श्रद्धा की शक्ति है। मुझे यह कहने में, कहना चाहिये कि श्रद्धा की शक्ति सर्वाधिक युक्ति शक्ति (becoming)है। क्योंकि इसी समय आप विचारते हैं—बोधन करते हैं कि आपने अब तक जो भी कुछ ज्ञान प्राप्त किया है उसका कोई मूल्य ही नहीं है। यह सब कुछ इतना महान् है, इतना विशाल है और इतना त्वरित है। यह इतना कुछ अधिक मात्रा में उत्कृष्ट है कि आपने इसे पहिले कभी नहीं जाना है और फिर आप विस्मित होते हैं, आश्चर्य में डुबकी लगाते हैं फिर आप श्रद्धा करने की स्थिति में आते हैं। अब जब मैं आपको अपने हाथ (इस प्रकार) मेरे सामने फैलाने को कहती हूँ और 'बन्धन' देने को कहती हूँ तो निश्चयपूर्वक यह काम करता है—कार्य परिणति होती है। तत्पचात् आप देखना आरम्भ कर देते हैं कि जब माँ इस प्रकार अपने आप पर क्रिया करती हैं अर्थात् अपने हाथ को झटकाती हैं तो इसका अनुभव हम सबको होता है। तभी हम अनुभव करने लगते हैं कि हम माताजी में

हैं और माताजी हमारे में हैं और हम इस तादात्मय की एक रूपकता के प्रति सजग भी रहते हैं। वे ही हमारी सर्वातीत लाभदायकत्व बन जाती हैं। तभी श्रद्धा का उदय होना आरम्भ हो जाता है। आप इसका बोध ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि यह विन्यास, विश्लेषण, विवेचन की परिधि से बाहर है। केवल मृत वस्तु अर्थात् जड़ वस्तुओं का ही आप विश्लेषण कर सकते हैं। चेतन का (जीवित अवस्था में) आप नहीं कर सकते हैं। वह संजीवन के भी बाहर है—यह वह है जो कुछ कि यह है। सो आप उसे सिद्ध (प्रत्यक्षीकरण) कर नहीं सकते। अतः आप आत्मसमर्पण प्रारम्भ कर देते हैं। जब आप समर्पण करना आरम्भ कर देते हैं और श्रद्धा आनी शुरू होती है तब आपकी चेतना वर्तमान दशा से और ऊपर उठती है और ये छोटी-छोटी क्षुद्र-क्षुद्र वस्तुएं जो रहस्यमय बन जाती हैं आप से विदा हो जाती हैं। यह तृतीय स्तर है जहाँ आपके तीनों गुण दृश्यमान हो सकते हैं। परन्तु वे आप पर अपना प्रभाव नहीं डालेंगे। सो प्राथमिक स्तर पर आप इच्छायें, कामनायें रखते थे। द्वितीयावस्था में जो एक बड़ी भारी चीज है, आप अपनी इच्छाओं की अभीष्ट की पूर्ति होते देख सकते हैं। परन्तु ये सब रहस्यवादितायें आप में भी मिश्रित हैं—घुली मिली हुई हैं। तृतीयावस्था में आप उन्हें देख सकते हैं, परन्तु वे आप पर अपना प्रभाव नहीं डालती हैं। यह तृतीय अवस्था वही है जब कि प्रत्येक को देखना पड़ता है कि वे आप पर प्रभाव डालकर प्रभावित तो नहीं कर पा रही हैं। आप 'पकड़' भी देख पा रहे हैं। परन्तु उस समय आप इसे पकड़ (कैचिंग) नहीं कहते हैं। आप इसे रेकार्डिंग (recording) कहते हैं। आप सोचते हैं कि हम यन्त्र हैं—उपकरण मात्र हैं। आप केवल रेकार्डिंग हैं। उसका प्रभाव क्रमशः क्षुद्रातिक्षुद्र होता चला जाता है।

आप उसके अन्दर इतने शक्तिशाली बन जाते हैं (हो जाते हैं) कि इस कैचिंग (पकड़) का प्रभाव न्यूनतम हो जाता है। आप उस प्रभाव का रेकार्ड रखते है। यह तृतीयावस्था है। अब इस तृतीयावस्था में, आप इस तृतीयावस्था तक उत्थान कर पहुँच पाये हैं—केवल एकमात्र मार्ग पूर्ण श्रद्धा है। श्रद्धा के बारे में सर्वप्रथम तो आपको कुछ वस्तुएं सीखनी पड़ेंगी, उनमें से एक तो है शिष्टाचार, परन्तु श्रद्धा के साथ यदि आप शिष्टाचार सीख कर पारंगत हो गये, उस दशा में आप इसके सम्बन्ध में कुछ भी बुराई (अनिष्टता) का अनुभव नहीं करेंगे। परन्तु यदि आपको इसके लिये बल प्रयोग किया गया अथवा ज़ोर ज़बरदस्ती की गई तो आपको अरुचिकर प्रतीत होगा। यह मिश्रित अवस्था बरक़रार रहेगी। सो श्रद्धा के विकास हेतु सर्वप्रथम तो आपको अपने आप स्पष्टता से समानता से कहना पड़ेगा कि "क्या आप नहीं देख रहे हैं कि घटना घटित हो रही है? क्या आप नहीं देख पा रहे हैं कि यह ऊपर की ओर उठ रही है—उत्थान कर रही है? क्या आप समझ नहीं पा रहे हैं?' अपने आप से कहिये, 'क्या यह त्वरित शक्तिमान नहीं है?' आप सुखासन से विराजकर सोच विचार कीजिये कि यह कितनी आश्चर्यजनक है, यह कितनी महान् है। आप महासागर से बात करें, पुष्पों से बात करें ये मानव जीवधारियों से कहीं श्रेष्ठतर हैं। अर्थात् ये जड़ वस्तुयें चेतन से कहीं बहतर हैं। उनसे कहिये क्या आप ऐसा नहीं सोचते हैं? आप म्युज़ियम (पुरातत्व संग्रहणालय) में जाइये और वहाँ उन समस्त मूर्तियों को सम्बोधित कीजिये कि "मैंने खोज पाया है, और मैंने उपलब्धि की है अर्थात् मैं ने ढूंढ लिया है और पाकर अधिकार में कर लिया है।" अपने आप से कहिये। इस प्रकार अपने आप से कहने से आप श्रद्धा का विकास कर लेंगे। और कोई मार्ग नहीं है। बहुत से लोगों ने मुझसे (माता जी से) यह प्रश्न किया है कि "श्रद्धा का विकास किस प्रकार किया जाये", अब यह एक निकृष्टतम निरर्थक वस्तु है। यहाँ आप कुण्डलिनी को जान रहे हैं, आप साक्षात्कार दे रहे हैं और फिर पीछे मुड़ते हैं और पूछते हैं कि "माँ, हम श्रद्धा को कैसे विकसित करें?" इस (मूर्खता) को

समझ पाना मेरे बलबूते और समझ के बाहर की चीज़ है। मेरा तात्पर्य है कि यहाँ क्या हो रहा है और आप कर क्या रहे हैं? यह श्रद्धा फिर अपना घेराव आरम्भ करती है। मेरे कहने का मतलब है कि यह तर्क वितर्क, आलोचना प्रत्यालोचना में नहीं लगती वरन् अपने में आत्मसात, (समा) विलय कर लेती है। यह बार-बार फटती भी नहीं है केवल सोखकर जज्ब कर लेती है। यह सोखने की प्रक्रिया अथवा आत्मसात प्रक्रिया में कई अन्य प्रकार से भी बाधायें पहुँचाई जाती हैं। आत्मसात के माध्यम से ही आप बढ़ोत्तरी पा सकते हैं। एक पेड़ कैसे बढ़ता है? यह केवल मात्र आत्मसात से। इस आत्मसात का मुख क्या है? निर्विचारिता है। निर्विचार क्या है? जहाँ आप इसके सम्बन्ध में सोच विचार नहीं करते हैं। अब, जब मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आपको सोचविचार नहीं करना है। कुछ निचली अवस्था में लोग कहेंगे "ओह, आप जानते हैं वह अत्यधिक प्रभुत्व स्थापित करने वाली (dominating) है यह शासकीय प्रभुत्व भाव से सम्पन्न है मुझे कहना चाहिये। परन्तु यह आत्मसात की प्रक्रिया तभी हो सकती है जब आप में श्रद्धा हो। और यह सारी की सारी आपके आन्तरिक में चली जाती है, आप एक शिशु की भाँति चूसते रहिये, रस पान करते रहिये। समस्त वस्तु आपके अन्दर जाती है, जैसे किसी झील या खाड़ी में जिस में कोई दरार नहीं है, यह सम्पूर्ण को प्रतिबिम्बित करती है, समस्त सृष्टि इसमें समायी है पूर्णरूपेण।

यदि इसके अन्दर दरारें पड़ जायें, फिर फैलाव विस्तार होता है। यह भ्रम क्या है? व्यग्रता और घबराहट क्या वस्तु हैं? ऐसी ही स्थिति श्रद्धा की भी है जो द्वितीय से आरम्भ होकर तृतीय तक जाती है। उदाहरणार्थ, अब हम सामान्य सा मामला, अपने फोटोग्राफ़ का ले लेते हैं। पहिले फ़ोटोग्राफ़ नहीं हुआ करते थे। केवल मेरे जीवनकाल की अवधि में ही ये फ़ोटोग्राफ़्स आरम्भ हुये हैं। यह आपकी सूचना के लिए बताती हूँ। इन फ़ोटोग्राफ्स को आप लोगों ने स्वयं ही विकसित किया है। और आपने अपना ही तरीक़ा अपनाया है। मैं स्वयं नहीं जानती थी कि यह फोटोग्राफ़ी मुझे इस प्रकार से पकड़ लेगी। यह तथ्य निश्चय से सही है। यह विकास आदिशक्ति (Holy Ghost) की सहायता से हुआ है परन्तु निस्सन्देह यह बिना कहे ही रह जाता है कि यह आपने विकसित किया है। मैं स्वयं भी नहीं जानती थी। आपको आश्चर्य होगा कि मैंने भी यह देखना आरम्भ किया है कि ये फोटोग्राफ्स इन मूर्तियों से अधिक प्रभावशाली हैं। क्योंकि ये मूर्तियाँ निर्माण की जाती हैं इसके अनुरूप कि जैसे मैं पहिले थी। क्योंकि यह वर्तमान की वस्तु है; यह वह है जैसी मेरी सत्ता है। मैं स्वयं भी चकित हुई कि यह तो चैतन्य लहरियां बाहर फेंक रही है और जीवन भी, और मेरा फ़ोटो इतना श्रेष्ठ आया। प्रधान समस्या इस बात की थी कि इतनी अधिक संख्या में लोगों के साथ कैसे सम्पर्क साधा जाये। आप कर सकते हैं एक सौ व्यक्तियों से सम्पर्क, और आप दो सौ व्यक्तियों से भी सम्पर्क साध सकते हैं। अधिक से अधिक आप एक हजार से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। क्या आप इस समूह को देखते हैं, यह अत्यन्त सरल है, यदि आपको कुछ व्याकुलता का अनुभव हो आप कुछ धन राशि व्यय कीजिये और आपका अभीष्ट सिद्ध हुआ। सहज योग एक घटना है, जागृति है और साक्षात्कार भी है। इसका हल किस भाँति से होगा।

यह मेरे लिये एक अत्यन्त विकट समस्या थी। यह ऐसा नहीं था कि मैं आपको पुस्तक दे देती हूँ और वापस ले लेती हूँ। इसको पढ़ती हूँ और कहती हूँ कि "हाँ, मैंने इसे पा लिया है, मैं हो गया हूँ" यह वास्तविक होना है, पकाना है (परिपक्वावस्था में पहुँचाना है), प्रौढ़ता को पहुँचाना है और यह सजीव पद्धति है। अब मैं इसे कैसे करूँ? और यहाँ इसका उत्तर प्रस्तुत है—फोटोग्राफ में। यद्यपि टी. वी. वालों ने मुझे परदे पर दिखाने के लिये

अभी आमन्त्रित नहीं किया है, परन्तु भारत में मैं परदे पर आ चुकी हूँ, केवल पूना में, यहाँ नहीं। यह एक दुष्कर कार्य भी प्रतीत होता है। पहिले तो उन्हें सब वस्तुओं को एक स्थान पर जुटाना पड़ेगा, फिर मुझे जाना पड़ेगा, जैसा कि सदैव होता रहता है। जो कुछ भी है आपके समस्त प्रचार माध्यम मेरे फोटो के माध्यम से प्रयोग में लाये जा सकते हैं। क्या ही सुन्दर, सुखद और धन्यतायुक्त यह है। और फोटोग्राफ, यदि आप विचार करो तो मेरा प्रतिनिधित्व करता है। मेरा विचार है आप उसका प्रस्तुतीकरण सही ढंग से नहीं कर पा रहे हैं। मैं आश्चर्यचकित हो गई कि मेरा फोटोग्राफ इतना अधिक शक्तिशाली है कि बहुतसी मूर्तियों को एक साथ पधराने से भी नहीं, माँ पृथ्वी की उपज से भी बढ़कर, क्योंकि इसमें बहुत से तत्व मौजूद हैं। उदाहरणार्थ आप देख रहे हैं कि इसमें प्रकाश तत्व है, इसमें जल तत्व भी विद्यमान है, इसमें भू-तत्व भी सम्मिलित है और वायु तत्व भी वर्तमान है। यदि वायु सही हालत में नहीं बह रही है तो फोटोग्राफ ठीक नहीं आयेगा। और इसी प्रकार इसमें ईथर तत्व (आकाश तत्व) भी मौजूद है। इन पाँचों तत्वों को मिलाकर भी आप मूर्ति का निर्माण नहीं कर सकते। ईथर तत्व इस में है। यदि आप एक फोटो यहाँ पर खींचते हैं आप इस को दूसरे स्थान पर प्रेषित कर सकते हैं। आप फोटो तो भेज सकते हैं परन्तु मूर्ति को नहीं, क्योंकि वह तो एक ही स्थान पर प्रतिष्ठित है। आप उस मूर्ति का फोटो मात्र ही भेज सकते हैं। अतः इसमें ईथर भी सम्मिलित है। अतः सिद्ध हुआ कि फोटो मूर्ति से अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है। यद्यपि फोटो एक पुनर्उत्पादन (reproduction) है परन्तु एक वास्तविक सत्य का प्रतिबिम्ब है जो पांचों तत्वों से युक्त है। सो आपके लिये यह एक प्रतिनिधि के रूप में है। यह बिल्कुल मेरे जैसा ही है क्योंकि मेरा ध्यान इसी में सन्निहित रहता है। हमने इसके साथ प्रयोग भी किये हैं। एक योगिनी मेरा फोटो अपने पास रखती थी। एक सम्बन्धी उसके पास आयी और वह उस फोटोग्राफ की हँसी उड़ाया करती थी, मजाक बनाती थी। और भी कई प्रकार की बुरी हरकतें उस फोटो के साथ करती थी। वह उस फोटो को मेरे सामने लाई और कहने लगी कि सब काला और अस्पष्ट हो गया है। सो मैंने उससे पूछा कि वहाँ और कौन था। उसने बताया कि मेरा एक सम्बन्धी आया था जिसके कारण इसकी यह दशा हो गई है अर्थात् विकृति आ गई है। मैंने उससे कहा अच्छा होता कि आप इसको समुद्र में पधरा देते क्योंकि उस पर से मेरा ध्यान हट चुका है। इसमें से चैतन्य लहरियां नहीं आयेंगी क्योंकि मेरा ध्यान उठ गया है, चला गया है। अब आपकी समझ में आया कि समस्या क्या बन गई है। मैं देख सकती हूँ कि आपको फोटो को इस प्रकार से नहीं रखना था। अतः सिद्ध हुआ कि एक फोटोग्राफ में और एक स्टैच्यू (मूर्ति) में अत्यधिक अन्तर है। क्योंकि मेरा ध्यान वहाँ पर विद्यमान रहता है। यह बात सच है कि पृथ्वीमाता ने जो मूर्तियां बनाई हैं वे भी वायब्रेशन्स रखती हैं और वे भी प्रदर्शित करती हैं कि उनमें वायब्रेशन्स मौजूद हैं। परन्तु वे कुण्डलिनी को जागृति नहीं दे सकती क्योंकि मेरा फोटोग्राफ अपने में मेरी इच्छा सङ्कल्प को सँजोये रखता है। वे नहीं कर सकते हैं। यदि वे कर सकते तो स्टोनहैन्ज भी कर सकते। यदि आप इन मूर्तियों के निकट जायें, और मैं भी वहाँ पर उपस्थित होऊँ, तो वे वायब्रेशन्स नहीं देंगी। आप को केवल यह करना पड़ेगा कि एक हाथ मेरी ओर फैलाना पड़ेगा और दूसरा उनकी ओर। तब फिर वे वायब्रेशन्स उगलना आरम्भ कर देंगी, परन्तु उन्हें मेरी आज्ञा को मानना पड़ेगा। यहाँ तक कि श्री गणेश जी की मूर्ति भी, जो अब ठीक दशा में है, परन्तु आरम्भिक काल में यह वायब्रेशन्स नहीं देती थी, जब तक कि इसको इस विधि द्वारा परिष्कृत न किया गया। उनमें प्राधिकरण हीनता का भाव नहीं है परन्तु इन फोटोग्राफ्स का शिष्टा-

चार पालन करना भी महत्वपूर्ण है जिसके बिना श्रद्धा का विकास नहीं हो पाता है। आपको एक फोटोग्राफ सदैव अपनी पॉकिट में रखना चाहिये। इसको आदर सत्कार दीजिये जितना सम्भव हो सके। इसको सजावट के लिये प्रयोग मत कीजिये बल्कि इसकी पूजा कीजिये। आप प्रातः उठकर दर्शन कीजिये। यह मैं आपको इसलिये बता रही हूँ कि श्रद्धा की समस्या सामने वह बिना इस शिष्टाचार के चित्त में उपज कर विकसित न हो सकेगी। मुझे ही आपको ये समस्त वस्तुएँ समझानी पड़ती हैं। यही इस अवतरण की सबसे निकृष्ट भाग हैं क्योंकि अन्य सभी आवश्यक कार्य आपने पूर्ण कर दिये हैं। अर्थात् जो लोग लार्ड जीसस क्राइस्ट के अनुयायी हैं, वे इस फोटोग्राफ का दर्शन प्रातः काल अवश्य करते हैं। विशेषतया हिन्दू धर्मावलम्बी प्रातः सोकर उठते ही चरण वन्दना करते हैं, सायं काल भी नमन करते हैं, सोने से पूर्व भी, बाह्यगमन से पूर्व भी, बाहर से आकर भी वे नमन अवश्य करते हैं। इसी प्रकार जब आपके पास फोटो है तो आप भी उस पर इसी समझ-बूझ के साथ काम कीजिये और धारणा रखिये कि माँ सदैव हमारे साथ हैं। आपको आश्चर्य होगा कि समस्त कार्य कैसे सफल होंगे।

श्रद्धा आपकी सहायता करेगी। यह घावों पर मरहम का काम करेगी। आप प्रत्येक समय में एक सी दशा में नहीं रह सकते। आप सदैव संक्रामक पकड़ की शिकायत नहीं करते रह सकते कि हाय मैं पकड़ा गया आदि आदि। आप देखते हैं कि हाथी चलता रहता है और कुत्ते भौंकते ही रह जाते हैं यही स्थिति आपकी भी है। आप परवाह न करें। चलते चलिये अपने सहज मार्ग पर माँ को हृदय में धारण करते। आपके समस्त कार्य निर्विघ्नतापूर्वक सिद्ध हो जायेंगे। उनकी महिमा ही ऐसी है।

सो तृतीय जागृति उस समय आती है जब आप यह सब देखभाल करना आरम्भ कर देते हैं और उसे रिकार्ड करते हैं। यह तृतीय अवस्था है। चतुर्थ अवस्था को तुरीय अवस्था कहा जाता है। चतुर्थ अवस्था में आप त्रिगुणात्मकता पर अर्थात् तीनों गुणों पर अधिकार जमा लेते हैं, हावी हो जाते हैं। और आप पञ्चभूतों का, पञ्चतत्वों का नियन्त्रण करते हैं।

इस स्थिति में पहुँचकर आप कहते हैं कि यह सक्रिय है। आपने देखा कि कल क्या हुआ था। (माँ ने वर्षा करा दी थी।) यह ऐसे कार्य होता है, आप इन तीनों गुणों के स्वामि हो जाते हैं। इसको ऐसे भी वर्णन किया जाता रहा है कि प्राथमिक रूप में आप कार में बैठे हुये हैं। इसे कोई हाँक (चला) रहा है वह आपका बायाँ और दायाँ भाग प्रयोग में ला रहा है। आप यह भी कह सकते हैं कि ब्रेक और एक्सीलेटर और कार हाँकी जा रही है। फिर वह आपको सिखाता है कि कार कैसे चलाई जाती है। तब आप सीखना आरम्भ करते हैं। अपने बायें और दायें भाग एक्सीलेटर और ब्रेक का प्रयोग करते हैं। फिर तीसरी अवस्था आती है जब आप चालक बन जाते हैं। परन्तु फिर भी आप चिन्तातुर हैं। क्योंकि आपके पीछे जो आदमी बैठा है उसकी चिन्ता करते रहते हैं, जो आपको जताता है कि आप क्या गलती कर रहे हैं और आपने क्या भूल की। तत्पश्चात् चौथी अवस्था आती है और आप दक्ष बन जाते हैं। और आप अन्य लोगों को भी ड्राइव करते हैं। आप किसी को भी आर्डर कर सकते हैं, आप सूर्य को ऑर्डर दे सकते हैं आप चन्द्रमा को भी ऑर्डर दे सकते हैं। ऑर्डर, आर्डर का अर्थ है उनसे कह देना मात्र काफ़ी है। मेरा तात्पर्य है कि किसी प्रकार का भी अधिकारयुक्त (dominating) का प्रश्न ही नहीं होना चाहिये। आपने इच्छा व्यक्त की और तत्काल ही उसकी पूर्ति हो गई। यह कहा और वह हुआ।

अब हम इस चतुर्थ स्टेज को तुरीय दशा के नाम से पुकारा करते हैं। तत्पश्चात् पाँचवीं स्टेज

आती है, जिसमें स्थित होने से जो उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। मैं उनके नामों की गणना तथा उन उनके नाम गिनाना नहीं चाहती हूँ क्योंकि इनमें आप लोगों की आसक्ति बढ़ जायेगी और आप उन पर चिपक जायेंगे। वे इतनी साफ़ सुथरी नहीं हैं। वे एक दूसरे के साथ संयुक्त हो सकते हैं परन्तु वे सब तुरीय दशा में हैं। जब आप उपयुक्तता से प्रौढ़ बन जायेंगे तब आप इस पञ्चम अवस्था में कूद पड़ेंगे, जिसमें आप कुछ कह भी न पायेंगे और न कुछ निर्णय ही ले पायेंगे। केवल आपके मुख से कुछ अनायास ही फिसल जायेगा। इसको फिसलना (slip out) भी नहीं कह सकते। यह कार्य करती है। यह एक अवस्था है। वहाँ आप समस्त परिस्थितियों को सँभालते हैं और यहाँ पर बैठे ही बैठे। बैठे हुये होने की दशा में ही आप एक दूसरे के चक्रों के सम्बन्ध में जानकारी भी रखते हैं तब आप इन पर स्वामित्व नहीं रखते बल्कि इस दशा में आप प्रवेश भी पा सकते हैं, कर सकते हैं। अब उदाहरण के लिये मैं आपको बताती हूँ कि मैं आपके sub-conscious में प्रवेश कर सकती हूँ। आपके सामूहिक चेतना में प्रवेश कर सकती हूँ और आपके supra-conscious में भी प्रवेश कर सकती हूँ। आपके समस्त क्षेत्रों में जहाँ मेरी इच्छा हो मैं जा सकती हूँ। यह भी तब जब कि आपने इस पर पूर्ण रूप से दक्षता करली हो। जब आप इसमें प्रवेश करते हैं। जब आप इस मकान के स्वामी हैं आप इसके अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। उस समय आप सप्तम अवस्था में प्रवेश करते हैं और यह वही अवस्था है जिसमें कि आप हैं। आपका वहाँ होना ही (आप की उपस्थिति ही) पर्याप्त है। केवल वहाँ होना ही ठीक है। कुछ भी अस्तित्व नहीं है। कोई सत्ता नहीं है। परन्तु आप केवल अपने ही लिये हैं। अब आप इन सातों अवस्थाओं में पहुँच सकते हैं। क्यों कि मैं इन सबसे परे खड़ी हूँ (स्थित हूँ) और मैं प्रथमावस्था में नीचे उतर आई हूँ और मैं आप लोगों को ऊपर खींचने का प्रयास कर रही हूँ। यदि आप मुझे नीचे की ओर नहीं खींचेंगे तो मैं आपको बहुत ऊपर बहुत दूरी पर खींच लूँगी। अतः आप से मेरी यही विनती है कि आप मुझे नीचे न खींचिये। यह इसी प्रकार से है कि जिस प्रकार से यह बिकमिंग (becoming) होने जा रही हैं। अब यह एक मूल आधार है; बुनियादी निर्माण और आप अब समस्त सुन्दर वस्तुओं को महसूस कर रहे हैं जो मध्यवर्ती हैं और ये समस्त वस्तुएं पुनः उचित् रूप से सँवारी सजाई जा सकती हैं और यथोचित सुघड़ता से की जा सकती हैं। परन्तु याद रहे यह बुनियादी निर्माण बिकमिंग अर्थात् युक्ति का है। अब आप इस स्टेज पर या उस स्टेज पर अपने को जमाने का अर्थात् फ़िक्स करने का प्रयत्न करने की कोशिश न करें तो अच्छा है। क्योंकि यह एक सामान्य सी वस्तु है उन लोगों के लिये जो अभी तक इसी के लिये सोच विचार करने में लगे हुये हैं। तब फिर माँ हमें बताइये कि हम किस स्टेज पर स्थित हैं? यह साधारण है। जब आप अपने आपको बढ़ाकर विकसित करेंगे तब यह आपके साथ भी घटित होगी। आपको कोई भी वस्तु निर्धारित नहीं करनी पड़ेगी। यह आपके साथ घटित होगी यही सब कुछ है, इतिश्री है। इसको प्रगति करने दीजिये, इसको बढ़ोतरी करने का अवसर दीजियेगा। परन्तु आप अभी भी उस अवस्था पर हैं जहाँ पर आप में से बहुत से सन्देहरहित चेतना या जागृति में स्थित हैं। परन्तु मैं फिर भी आपको यही कहूँगी कि मौलिक इच्छा अभी भी वहाँ नहीं है और वह सुदृढ़ भी नहीं है। यह मौलिक इच्छा जो साफ़ सुथरी बना दी जायेगी। आप देख सकते हैं कि कभी-कभी ऐसा भी होता देखा गया है कि बना बनाया मकान ही गिरा दिया जाता है क्योंकि उस की बुनियादें अर्थात् नींव ही सुदृढ़ नहीं होती हैं। कभी-कभी नींव में ही कुछ बुनियादी ग़लतियाँ हो जाती हैं जिससे आप अपने आपको नीचे ले जाते हैं, ठीक नीचे और तब आपको विदित होता है कि, ओह, यह अभी तक वहाँ है, इसको बाहर करो।

आपको उन समस्त वस्तुओं को घास पात की तरह हटाना है, निराई करनी हैं। इस कार्य में आपको वास्तविकता से सचेत रहना है परन्तु आप आत्म करुणा के जाल में न फँस जाना, आप कभी भी इस अपराध वृत्ति के व्यापार में नहीं फँसना। परन्तु अपने आप कतई निश्चित, दृढ़ यथार्थ भाव वृत्ति अपनायें, "यथा बहुत अच्छा यह मेरी कार है, मैं ही इसे सुधार कर ठीक दशा में करूँगा"। यदि आप इस कार के काम में दक्ष भी हो गये और कार अनुपयोगी है तो इसका लाभ ही क्या हुआ ? इच्छा कार के समान है। कुण्डलिनी ही वह इच्छा है, यदि आपको कुण्डलिनी दुर्बल है तो इसको सजीव बनाइये सहारा देकर और इसको सुधारने का प्रयास कीजिये। इसको ऊपर उठाने की कोशिश भी कीजिये। इसको भोजन खिलायें, अपनी कुण्डलिनी का पोषण युक्ति विकसिंग के माध्यम से करें। अन्य समस्त इच्छाओं को एक ही इच्छा के साथ तटस्थ एवं समभाव में रखें। सोच विचारकर ही कुछ कहने की आदत डालें कि हम क्या कह रहे हैं अथवा क्या कहने जा रहे हैं। क्या आप एक इच्छाके सम्बन्ध में कह रहे हैं ? आप सर्वाधिक सौभाग्यशाली हैं कि आपके भी कोई एक ऐसा है जो आप से अत्यन्त प्रेम करता है। और वह आपको यह समस्त वस्तुएँ दे सकता है। आप अत्यधिक भाग्यशाली हैं जीवात्मा हैं। आप इसका सदुपयोग करें। ईश्वर आपको सर्दव सुखी, प्रसन्न रखे। परन्तु एक बात और है वह यह कि इस स्टेज पर, आप जहाँ कहीं भी हों, आपको अपनी श्रद्धा में बढ़ोत्तरी करनी है। आप सबको श्रद्धा की बहुतायत से आवश्यकता होगी। जब तक श्रद्धा उद्गम के रूप में (source) है। इसी से आप जज्ब करने का काम लेंगे—यही एक पौधे की तरह से हैं जिसको आप उगायेंगे, पोषित कर बड़ा करेंगे। श्रद्धा को आप बढ़ाते ही जाइये क्योंकि (शास्त्रकारों ने कहा भी है कि श्रद्धा फलदायकः) आपने अब सन्देह की सीमा को पार कर लिया है। सो अब श्रद्धा अपना कार्य सञ्चालन करेगी।

'CHARMINAR'
India's Largest Sellers of Asbestos Cement Products

HYDERABAD ASBESTOS
CEMENT PRODUCTS LTD.

Marketing Divisions :
Sanatnagar, Hyderabad-500018
Himalaya House, 23, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110001
Chanakya Place, Gardener Road, Patna-800001

Works : Hyderabad (A.P.), Ballabgarh (Haryana) & JASIDIH (Bihar)

: : ॐ माँ : :

परम पूज्य माताजी का पत्र*

परमप्रिय सहजयोगी,

हर एक मनुष्य को शान्ति चाहिए, धन चाहिए । अपनी सत्ता चाहिए। पर इन सभी बातों का मूलस्थान प्रभु-परमेश्वर ही है, तब क्यों न हम उसी की चाहत और उसे ही पाने की इच्छा करें ? उसी की चाहत करें। परमेश्वर की शान्ति हमें मिले और परमेश्वर हमें मिले यही हमारी लालसा भी क्यों न हो ? सहजयोगी और साधारण इन्सान की सन्तुष्टता (समाधान में) यही अन्तर होना चाहिए। परमेश्वर पाने की लालसा भी हमें उसी के चरणों में अर्पित करने का साहस दे। एक वही है, उसी के चरणों में और केवल उसी पर ही ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। इसलिए तपस्विता चाहिए । इसलिए सारे लोभ, मोह छूटने चाहिएं। जिससे चिपके रहें ऐसा इस संसार में क्या है ? जहाँ सभी शान्ति पाते हैं, और जहाँ पर सब कुछ नष्ट हो जाता है उन्हीं चरणों की महत्ता समझनी चाहिए। तभी आपको महत्ता प्राप्त होगी। हमने ये किया, हमने वो किया ऐसी व्यर्थ की कल्पना क्यों करें ? जो आप से बन रहा है वह सारी परमेश्वर की सत्ता है, परमेश्वर का चमत्कार है यह बात दिमाग में लानी पड़ेगी। वह चमत्कार देखने वाले ही केवल आप हैं। इसलिए परमेश्वर से प्रार्थना करें—"मेरा, मैं, मैं निकल जाए, हम तुम्हारे ही एक अङ्ग हैं, हे प्रभू, यह सत्य हमारे रोम-रोम में भर दो।" फिर परमेश्वर का यह आनन्द हमारे तन-मन के कण-कण को छू कर सुन्दर राग से यह जीवन भर जाएगा। यह सब पूरी मानव जाति को सम्मोहित करेगा। इस विश्व का मार्ग प्रकाश से प्रकाशित करेगा। अपने हृदय से अमर्यादित प्रेमधारा बहने दो क्यों कि 'प्रेम' अमर्याद है। तुम्हारा ध्यान मर्यादातीत बातों पर हो।

परमेश्वरी राज्य के आप अधिकारी। हो फिर ऐसे बैठकर रोते क्यों हो ? इस राज्य में आपके बड़े भाई देवताओं के रूप में कुण्डलिनी के मार्ग पर बैठे हैं उन्हें पहचानिए। उन्हें सराहिए और जागृत कीजिए।

कुण्डलिनी आपकी माँ है; माँ के आञ्चल की छाँव में चलने की विद्या प्राप्त कीजिए। अपने आप में नम्रता लाइए। वह आपको उस पार ले जायेगी जहाँ से सभी बातों का उद्गम है, जहां पर सब स्रोत हैं। उसी को पाना चाहिए, उसी को पाने की चेष्टा करनी चाहिए। बाकी सब तो(सहज)आसानी से मिलता है। ध्यान धारणा, तपस्विता, प्रेम और शान्तिमय जीवन, यह आचरण आप छोड़ देते हो और मुझे आसानी से पाने की चाह रखते हो। परन्तु प्रापञ्चिक बातों से आपको कितना लगाव है ? स्वयं के ही बारे में सोचने की कितनी हट है। उसे क्यों नहीं आसानी से छोड़ देते ? मैं महामाया हूँ इसलिए आप सत्य से मत दूर भागिए। मुझे पाने की चेष्टा कीजिए मैं आप लोगों की ही हूँ। बड़े-बड़े ऋषि मुनियों को भी जो नहीं मिला वह तुम्हें दिया है। वह बहुत बड़ी सम्पत्ति है। उसी के बल पर हजारों ग्रह, तारे निर्माण किये। आपके नवनिर्माण में बहुत बड़ा अर्थ है। उसे आपको समझना चाहिए 'स्व' का अर्थ लगाइए। वह सहजयोगियों के ही समझ में आएगा। यह बहुत बड़ी कला है। यह कला हमने आपको सिखाई, क्या हुआ ? जिसे भी लाभ होना है वह रोने नहीं बैठता इसका मतलब आपको लाभ नहीं हुआ है। अगर आप इस कला में निपुण होंगे तो इस कला के दरवाजे खोलकर आप इसी में डूब जायेंगे, उसी में मग्न हो जायेंगे। विश्व की प्रापञ्चिक बातों से किसी को सन्तुष्टता नहीं मिलती। आप लोगों के पास इस भण्डार की चाबी है, जो

हमने आपको सौंपी है। अरे, दरवाज़े खोलने के लिए आपकी हथेलियाँ तो घूमनी चाहिएं। यह सब आप लोगों ने आसानी से छोड़ दिया है और जिसे आसानी से छोड़ना चाहिए उसे पकड़ कर चिपके बैठे हैं। सवेरे हमें जगकर ध्यान में बैठना चाहिए। अपने आप क्रोध, द्वेष, परनिन्दा, क्रूरता ये सभी बातें छोड़ देनी चाहिएं।

आज गुरुपूर्णिमा है, हमें दक्षिणा क्या दी? आप पैसे देंगे तो ये इस गुरुभाऊलि के पाँव की धूलि समान भी नहीं है। ये सोच लीजिए। तुम्हारे हृदय देने चाहिएं। वह भी पवित्र और साफ़ होना चाहिए। अपने मन को साफ़ करके स्वच्छ बनाना चाहिए। इस मामले में आलस छोड़ दीजिए। प्रतिज्ञा कीजिए सवेरे उठकर घण्टाभर भजन-पूजन व ध्यान धारणा करेंगे। शाम को भी आरती व ध्यानधारणा करनी चाहिए। अरे, जो शैतानों के (भूतों के) शिष्य हैं वे श्मशान में जाकर मेहनत करते हैं और आप लोगों को सब कुछ आसानी से चाहिए, ये बात समझ में नहीं आती। आपस में बैठ कर व्यर्थ की गप्पें हाँकना छोड़ दीजिए। अपना समय बेकार मत गँवाइये। समय का चक्र चालू ही रहेगा। सभी चाबियाँ इकट्ठा करके खाली हाथ लौट जायेंगे क्या? आपको परमेश्वर की सत्ता नहीं स्वीकार करनी है तो शैतानों का राज्य आयेगा और इसलिए आप स्वयं ही ज़िम्मेदार हैं। आप सहजयोग के अधिकारी हो इसलिए आपको विशेष रूप से छाँटा है। यह बात पक्की समझ लीजिए। नहीं तो इस आनन्द का सञ्चय कहीं और चला जाएगा। और आपके पागलपन की वजह से दूसरे लोग अधिकारी बन जायेंगे। इसलिए अपने आप में सयानापन लाइए और जाग जाइए। पाँव जमाकर खड़े हो जाइए। हर एक क्षण को अनेक दिशायें हैं, उन दिशाओं में आपकी किरणें फैलनी चाहियें। अपने पङ्ख फैलाइए। सारे संसार का कल्याण आप ही के हाथों से होने वाला है। निष्क्रियता छोड़ दीजिए। जो अभी तक पार नहीं हैं, जिन्हें आशीर्वाद नहीं मिला है, उन्हीं से सम्पर्क साधकर सहजयोग सिखाने की चेष्टा कीजिए। तब परमेश्वर का राज्य आप ही का है। वह सब माङ्गल्य आपको मिले इसलिए हमारा प्रयत्न चालू है। लन्दन में बारह लोगों को तय्यार कर रही हूँ, वे लोग अन्दर से बहुत सच्चे हैं। उनके साथ आप लड़ाई मत करिए। अपने आपको जानिए। आप लोगों को मन्दिर की तरह बनाया है। उसे साफ़ रखिये। मुझे सब मालूम है। मेरे सामने ज्यादा होशियार मत बनिए। आप लोगों में कुछ लोग आनन्द सागर में डूब रहे हैं। उसी तरह आपका भी कल्याण हो यह आशीर्वाद आज दे रही हूँ।

सन्तुष्टता और प्रापञ्चिक इच्छायें ये दोनों एक ही ऊँचाई पर होने चाहियें, जैसे हमारे दोनों पाँव एक साथ बढ़ते हैं। अगर एक पाँव छोटा रह जाएगा तो लंगड़ापन आएगा। सन्तुष्टता कम रहेगी तो अपने आप ही आपकी हालत भी ठीक नहीं रहेगी। सहजयोगी की सन्तुष्टता उसके आस-पास के वातावरण पर निर्भर नहीं है। वातावरण कैसा भी क्यों न हो वह उसे सुखदायी ही लगना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो वह सन्तुष्टता बाह्य है आन्तरिक नहीं है। परमेश्वर आपको अपने चरणों में स्थान दे।

आपकी माँ

निर्मला

---

* श्री माताजी के मूल मराठी पत्र का हिन्दी रूपान्तर।

शिवं शिवकरं शान्तं, अभिवात्मानं शिवोत्तमम् ।
शिवमार्ग प्रणेतारं, प्रणतोऽस्मि सदाशिवम् ॥

हम आपके शिशु नितान्त श्रद्धा व भक्ति भाव से उस पावन प्रभु के सम्मुख नमन करते हैं जो परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी के हृदय कमल में वास करता है। वह हमारे उद्धार का उद्गम-स्थल है। ओ३म्

श्री शिव के १०८ नाम

१. शिव
२. शङ्कर
३. स्वयम्भु
४. पशुपति
५. क्षमाक्षेम
६. प्रिय भक्त
७. कामदेव
८. साधु साध्य
९. हृत्पुण्डरीकासीन
१०. जगद् हितैषिन्
११. व्याघ्रकोमल
१२. वत्सल
१३. देवासुर गुरु
१४. शम्भु
१५. लोकोत्तर सुखालय
१६. सर्वंसह
१७. स्वधृत
१८. एक नायक
१९. श्री वत्सल
२०. शुभद
२१. सर्वसत्वावलम्बन
२२. शर्वरीपति

२३. वरद
२४. वायु वाहन
२५. कमण्डलु धर
२६. नदीश्वर
२७. प्रसदस्व
२८. सुखानिल
२९. नागभूषण
३०. कैलाश शिखर वासिन्
३१. त्रिलोचन
३२. पिनाक पानी
३३. श्रमण
३४. अचलेश्वर
३५. व्याघ्रचर्माम्बर
३६. उन्मत्तवेष
३७. प्रेतचारिन्
३८. हर
३९. रुद्र
४०. भीम पराक्रम
४१. नटेश्वर
४२. नटराज
४३. ईश्वर
४४. परमशिव
४५. परमात्मा
४६. परमेश्वर
४७. वीरेश्वर
४८. सर्वेश्वर
४९. कामेश्वर
५०. विश्वसाक्षिन
५१. नित्यनृत्य
५२. सर्ववास
५३. महायोगी
५४. सद्योगी
५५. सदाशिव
५६. आत्मा
५७. आनन्द
५८. चन्द्रमौलि
५९. महेश्वर
६०. सुधापति
६१. अमृतपा
६२. अमृतमय
६३. प्रणतात्मक
६४. पुरुष
६५. प्रच्छन्न
६६. सूक्ष्म
६७. कर्णिकरप्रिय
६८. कवि
६९. अमोघदण्ड
७०. नीलकण्ठ
७१. जटिन्
७२. पुष्पलोचन
७३. ध्यानाधार
७४. ब्रह्माण्डहृत
७५. कामशासन
७६. जितकाम

७७. जितेन्द्रिय
७८. अतीन्द्रिय
७९. नक्षत्रमालिन
८०. अनाद्यन्त
८१. आत्मयोनि
८२. नभयोनि
८३. करुणा सागर
८४. शूलिन्
८५. महेष्वासः
८६. निष्कलङ्क
८७. नित्यसुन्दर
८८. अर्धनारीश्वर
८९. उमापति
९०. रसद
९१. उग्र
९२. महाकाल
९३. कालकाल
९४. वैयाघ्रधुर्य
९५. शत्रुप्रमथिन्
९६. सर्वाचार्य
९७. सम
९८. आत्मप्रसन्ना
९९. नरनारायणप्रिय
१००. रसज्ञ
१०१. भक्तिकाय
१०२. लोक वीराग्रणी
१०३. चिरन्तन
१०४. विश्वम्बरेश्वर
१०५. नवात्मन्
१०६. नवयेरुसलमेश्वर
१०७. आदिनिर्मलात्मा
१०८. सहजयोगीप्रिय

प्रिय मुमुक्षुगण, सावधान !

हमारे भीतर एक बन्धुघाती छली (Judas) विद्यमान है। वह हमारे साथ चलता है, हमारे साथ क्रिया करता है, दैवी माँ की स्तुति गान करता है। किन्तु वह एक भयङ्कर नाग है। छद्म वेष में वह पिशाच का दूत है। कपट से यीशू को सूली पर चढ़ाने (Crucifixion) के पीछे उसका हाथ था। सम्भवतः वह पूतना की भाँति, जो बाल गोविन्द को विष देने आई थी, एक नारी हो सकती है।

अपनी पूज्य माँ के ममत्व में एकत्व के रस को हम पहचानें और उनके दैवी तत्व की प्रज्वलित लौ (मशाल) के प्रकाश में अपने सम्मुख प्रशस्त पथ का दर्शन करें। सहजयोग की नौका में सवार उसे डुबाने को तत्पर ऐसे छुपे कालनेमियों से सावधान।

परमात्मा आपको उस मेधावी दुरात्मा-मानसिक कुप्रवृत्तियों के साक्षात् स्वरूप को पहचानने के लिये पर्याप्त ज्ञान प्रदान करे।

—परम पूजनीय श्री माताजी

प्रिय बन्धु !

श्री माताजी का प्रेम सबके लिये प्रवाहित हो रहा है। जिस प्रकार उन्होंने हमें सांस लेने के लिये शुद्ध वायु, पीने के लिये निर्मल जल, भ्रमण करने के लिये खुली जगह और देखने के लिये गगन का निर्माण किया है, उसी प्रकार हमारी चेतना को शान्ति प्रदान करने के लिये उनका यह पवित्र प्रेम है। हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि हम उनके इस प्रेम के लिये किस प्रकार उपहार भेंट करें। अतः हम उन्हें अपने हृदयासन पर आसीन होने के लिये अत्यन्त श्रद्धापूर्वक आमन्त्रित करते हैं। हम नतमस्तक होकर प्रेमपूर्वक उनको अलंकृत करते हैं। प्रेम से उनका अभिषेक करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे हृदयाङ्गन में सदा निवास करें।

जय माता जी

आपका ही

सी. एल. पटेल

त्यौहार

१४ जनवरी ८३	...	मकर संक्रान्ति
१९ जनवरी ८३	...	वसन्त पञ्चमी
११ फरवरी ८३	...	महा शिवरात्रि
२१ मार्च ८३	...	परम पू. माताजी का जन्म दिवस
२८-२९ मार्च ८३	...	होली
३ अप्रैल ८३	...	ईस्टर रविवार
७ अप्रैल ८३	...	परम पू. माताजी का विवाह दिवस
१४-२१ अप्रैल ८३	...	नवरात्रि
२१ अप्रैल ८३	...	रामनवमी
२५ अप्रैल ८३	...	महावीर-जयन्ती
२७ अप्रैल ८३	...	हनुमान जयन्ती
५ मई ८३	...	महासहस्रार दिवस
१७ मई ८३	...	आदि शंकराचार्य जन्म दिवस
२५ मई ८३	...	नृसिंह जयन्ती
२६ मई ८३	...	बुद्ध पूर्णिमा
२४ जुलाई ८३	...	गुरु पूर्णिमा
३१ अगस्त ८३	...	श्री कृष्ण जन्माष्टमी